बड़ी तालाब

प्रस्तावना : उदयपुर से उत्तर–पश्चिम की ओर 12 कि.मी. दूर स्थित इस कृत्रिम झील का निर्माण महाराणा जयसिंह प्रथम ने 1684 ई.सं. (1664–1678ई.सं.) में करवाया। इसकी पाल की लम्बाई 180 मीटर एवं चौड़ाई 18 मीटर है एवं उस पर तीन कलात्मक छतरियाँ बनी हुई है। इसकी कुल भराव क्षमता 32 फीट एफआरएल पर 10.48 एमसीएम (370 एमसीएफटी) है। जल ग्रहण क्षेत्र मात्र 15.55 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है जो इसकी भराव क्षमता की तुलना में अत्यन्त सीमित है। यह झील चारों ओर से ऊँची पहाड़ियों से घिरी हुई है। वर्षाकाल में ये पहाड़ियाँ सघन रूप से वनस्पति से ढकी हुई होने से यह झील बहुत रमणीय एवं दर्शनीय होती है। इस झील के जल का बड़ी, उपली बड़ी, हवाला सहित आसपास के क्षेत्र में सिंचाई के साथ पेयजल के रूप में उपयोग होता है। वर्ष 2019 से इसका जल उदयपुर शहर की पेयजल आवश्यकता हेतु भी उपयोग में लिया जा रहा है। इस झील के पूर्ण भराव के उपरान्त अतिरिक्त जल एक नाले के माध्यम से फतहसागर झील में गिरता है। वर्तमान में इसका जल पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त है। पर्यटन की दृष्टि से विकास की विपुल संभावना है। नगर निगम, उदयपुर ने बड़ी तालाब की पाल पर कलात्मक छतरियों के साथ समुचित प्रकाश व्यवस्था एवं पार्क का निर्माण किया। वन विभाग की ईको डवलपमेन्ट कमेटी (ईडीसी) ने पाल को और सुन्दर बनाने हेतु छतरियों में लाईटें लगाकर एक समन्वित प्रयास किया है। पाल पर केन्टिन व्यवस्था से यहाँ पर आने वाले पर्यटक एवं स्थानीय निवासियों को व्यवस्थित खान–पान, पेयजल के साथ अन्य सुविधाएँ मिलने लगी हैं। झील के दक्षिण–पश्चिमी छोर पर सुन्दर इकोटोन पार्क भी विकसित किया गया है।

बड़ी तालाब	
स्थिति	उदयपुर से पश्चिम तरफ
निकटस्थ गांव/तहसील	बड़ी, गिर्वा
देशान्तर	73° 36′ 00″ पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24° 37′ 50″ उत्तरी अक्षांश
नदी/नाला	बेडच नदी
निर्माण समाप्ति वर्ष	वर्ष 1678
बाँध का प्रकार : कृत्रिम शुद्ध मीठे पानी की झील, मिट्टी के बाँध के साथ दोनों ओर की दीवार	
शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र	15.54 वर्ग किलोमीटर
सकल जलग्रहण क्षेत्र	15.54 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	10.48 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	7.23 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	149.35 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	149.96 मीटर
टैंक बंध स्तर	151.48 मीटर
सील स्तर	139.60 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	9.75 मीटर/32 फीट
स्तर–जीटीएस/आर्बिटरी	आर्बिटरी
अधिकतम् लम्बाई	..... किलोमीटर
अधिकतम् चौड़ाई	..... किलोमीटर
सतही क्षेत्रफल	3.23 वर्ग कि.मी.
औसत गहराई	..... मीटर
अधिकतम् गहराई	22.86 मीटर/ 75 फीट
समुद्रतल से ऊँचाई	..... मीटर
अधिशेष जल निकास व्यवस्था : गेटेड स्पीलवे	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	108.56 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	वेस्ट वीयर, 8.22 मीटर
– नहर की लम्बाई (110)	दायीं – 10 चेन बायीं – 100 चेन
सकल सिंचित क्षेत्र	738 एकड़/298.65 हेक्ट.
कृषि योग्य सिंचित क्षेत्र	620 एकड़/250.90 हेक्ट.
गहन सिंचित क्षेत्र	400 एकड़/161.87 हेक्ट.

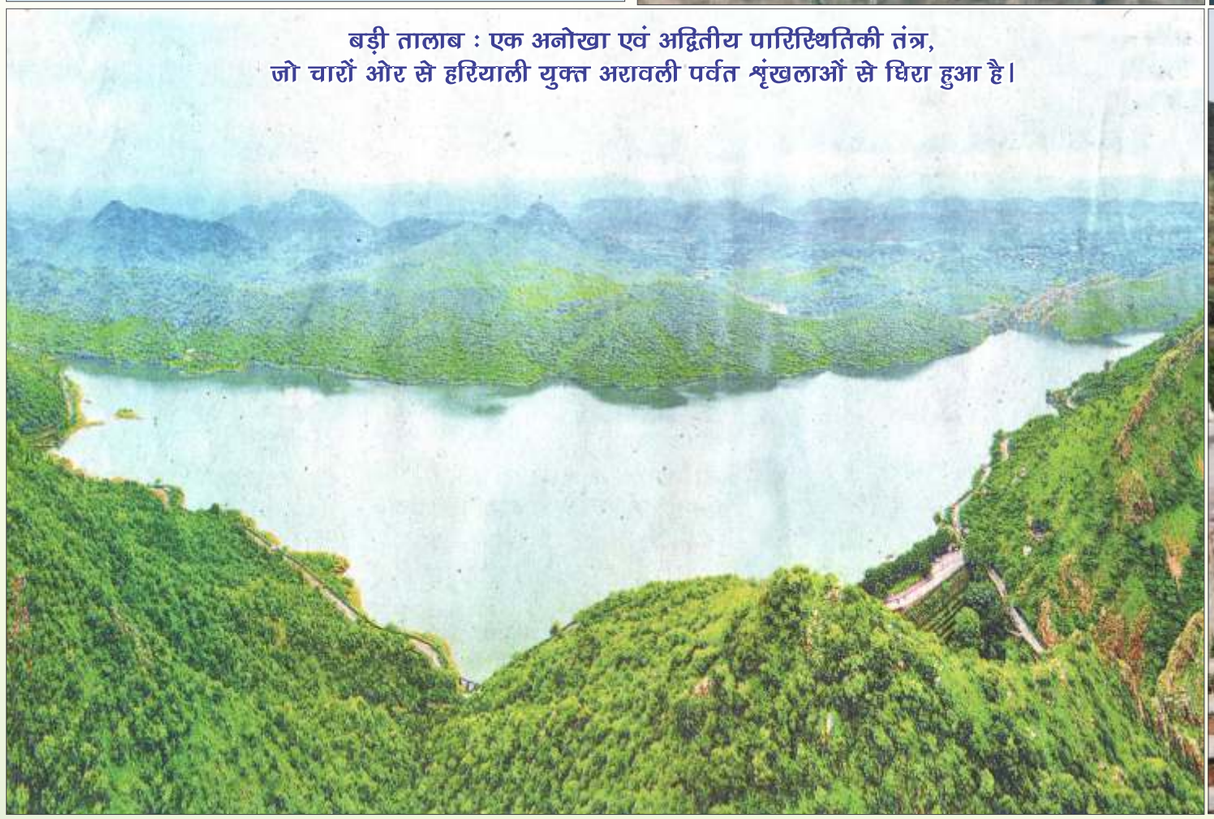

बड़ी तालाब : एक अनोखा एवं अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र,
जो चारों ओर से हरियाली युक्त अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है।

वर्ष 2011 से 2022 के मध्य बड़ी तालाब मात्र दो बार 26 सितम्बर, 2017 एवं 28 अगस्त, 2022 को
पूर्ण 32 फीट तक भरा एवं छलका। इस तालाब को भरने हेतु अतिरिक्त जल स्रोत की महत्ती आवश्यकता है।

पश्चिमी छोर से

वर्षा ऋतु में बड़ी तालाब का जल स्तर बढ़ने एवं पूर्ण भराव स्तर पर इसका विहंगम नजारा अत्यधिक दर्शनीय एवं रमणीय होता है। इसके चारों ओर स्थित पहाड़ियाँ सघन वनस्पति से आच्छादित हो जाने पर इसके प्राकृतिक स्वरूप में अद्वितीय निखार आता है।

बड़ी तालाब का आंशिक रिक्त अवस्था में पूर्ण स्वरूप : ग्रीष्म ऋतु में

बड़ी तालाब एवं इसकी पाल का मनोहारी विहंगम् दृश्य

बड़ी तालाब की पाल पर स्थित सुन्दर छतरियों का चित्ताकर्षक दृश्य

बड़ी तालाब की पाल पर स्थित सुन्दर पार्क

झील एक, चित्र अनेक। हर दृश्य है मोहक। अपलक निहारता है इसे हर दर्शक।

इतिहास के पृष्ठों से ...

बड़ी का तालाब (जना सागर) : उदयपुर से पश्चिम दिशा में 12 कि.मी. दूर स्थित बड़ी नामक ग्राम में महाराणा राजसिंहजी ने 15 नवम्बर, 1664 ई.सं. (वि.सं. 1721 मार्ग शीर्ष कृष्ण 10 गुरुवार) को अपनी माता और महाराणा जगतसिंहजी की रानी जनादे बाईजीराज (राजमाता) के नाम से तालाब बनाने का मुहूर्त किया। 31 जनवरी, 1669 ई.सं. (वि.सं. 1725 माघ शुक्ल 10) को तालाब की प्रतिष्ठा कर उसका नाम जना सागर रखा गया। इस जलाशय के निर्माण का उद्देश्य मुख्यतया सिंचाई के प्रयोग में लिया जाना प्रस्तावित था एवं भविष्य में होने वाले युद्धों के सम्बन्ध में भी इसकी महत्ता समझी जा सकती थी। वैसाख सुदी 3 गुरुवार वि.सं. 1735 (1678 ई.सं.) में जनासागर का कार्य पूर्ण हुआ। यह जलाशय उभयेश्वर की नाड़ी मोरवानी नदी पर बाँधा गया है जो जनासागर में पश्चिम से आती है। इसका बाँध 197.3 मीटर लम्बा है। 3.23 वर्ग कि.मी. भू–क्षेत्र वाला यह जलाशय 11.2 मिलियन क्यूबिक मीटर भराव क्षमता रखता है। यह 75 फीट गहरा है। इसका पानी बहुत ही स्वच्छ है। सर्वप्रथम तालाब की नींव खोदी गयी जिसे ''पाँव लेना'' कहते थे। नींव में सीसा ढ़ाला गया और नींव को शुद्ध किया गया। इसके पश्चात् 9.14 मीटर का आधार, उस पर बाँध बनाया गया। जना सागर पर राजप्रशस्ति मूल के अनुसार कुल 6,88,000 रुपये व्यय हुए एवं इसकी प्रतिष्ठा एवं धार्मिक कार्यों (दान) पर 2,61,000 रुपये व्यय हुए। महाराणा फतहसिंहजी ने जनासागर की मरम्मत तथा नहर निर्माण हेतु 22,106 रुपये 8 आने व्यय किये। जनासागर का बाँध इतना सुदृढ़ बना हुआ है कि सन् 1875 ई.सं. में अतिवृष्टि के परिणाम स्वरूप आई बाढ़ से बाँध के ऊपर अपार जलराशि निकल जाने के पश्चात् भी इसमें दरार नहीं पड़ी। इस तालाब की स्थापत्य कलागत विशेषता यही है कि यह भी पूर्णतः भारतीय परम्परानुसार निर्मित है तथा यह अद्‌भुत सुदृढ़ता युक्त है।

बड़ी तालाब पाल, पूर्ण भराव स्तर एवं ओवरफ्लो : बड़ी तालाब की पाल इस तालाब के रिक्त होने पर यह दर्शाती है कि यह पर्याप्त गहराई के साथ एक मजबूत आधार के साथ बनी हुई है। पाल के मध्य की दो छतरियाँ एक के बाद एक तालाब के पैंदे की ओर निर्मित हैं, जो इस तालाब की सुन्दरता में अभिवृद्धि करने के साथ नीचे वाली छतरी के पूर्णतया जलमग्न हो जाने की स्थिति में तालाब के पूर्ण भराव स्तर यानी ओवरफ्लो होने का संदेश भी देती हैं। इस तालाब में पानी उबेश्वर महादेव की पहाड़ियों से आता है। पूर्व में यह तालाब अधिकतर वर्षों में पूर्ण रूप से भरने के साथ इसका पानी आसपास के गांवों में खेतों की सिंचाई हेतु उपयोग में लिया जाता था।

ऐतिहासिक बड़ी तालाब के केचमेन्ट क्षेत्र उबेश्वर महादेव की पहाड़ियों में अतिक्रमण तो नहीं है, मगर इस क्षेत्र में आधे दर्जन से अधिक एनिकट बन जाने से पानी की आवक काफी कम हो गई है जिससे यह पूर्ण रूप से भर नहीं पा रहा है। इसके फलस्वरूप वर्ष 2011 से 2021 की समयावधि में मात्र एक बार (वर्ष 2017 में) ही पूर्ण भराव स्तर 32 फीट तक भर कर छलका है। बड़ी तालाब को भरने में ये एनिकट रोड़ा बने हुए हैं तथा इनके ओवरफ्लो के बाद ही पानी इस तालाब तक पहुँचता है। साथ ही विशेषज्ञों का कहना है कि इसके केचमेन्ट क्षेत्र का पानी मदार छोटा तालाब की ओर डायवर्ट हो गया था जिससे इस तालाब में पानी की आवक बहुत ही कम रह गई थी। स्थानीय लोगों के प्रयासों से इसे पुनः बड़ी तालाब की ओर मोड़ा गया है, लेकिन एनिकटों के निर्माण एवं छोटा मदार में जाने से अभी भी यह अधिकतर वर्षों में पूर्णतया लबालब नहीं हो पाता है।

इस तालाब को प्रतिवर्ष नियमित रूप से भरने के लिए गोगुन्दा के मजावद गांव के पास बगडून्दिया तालाब से करीब 5 से 6 किलोमीटर की टनल बनाकर धार गांव से होते हुए पानी जाने के साथ ही देवास–प्रथम से भी इसे जोड़ कर अतिरिक्त पानी लाया जा सकता है। इस तालाब के पाल की मजबूती एवं चारों ओर से पहाड़ियों से घिरे होने की स्थिति में इसकी अधिकतम् जल भराव क्षमता में समुचित अभिवृद्धि की जा सकती है।

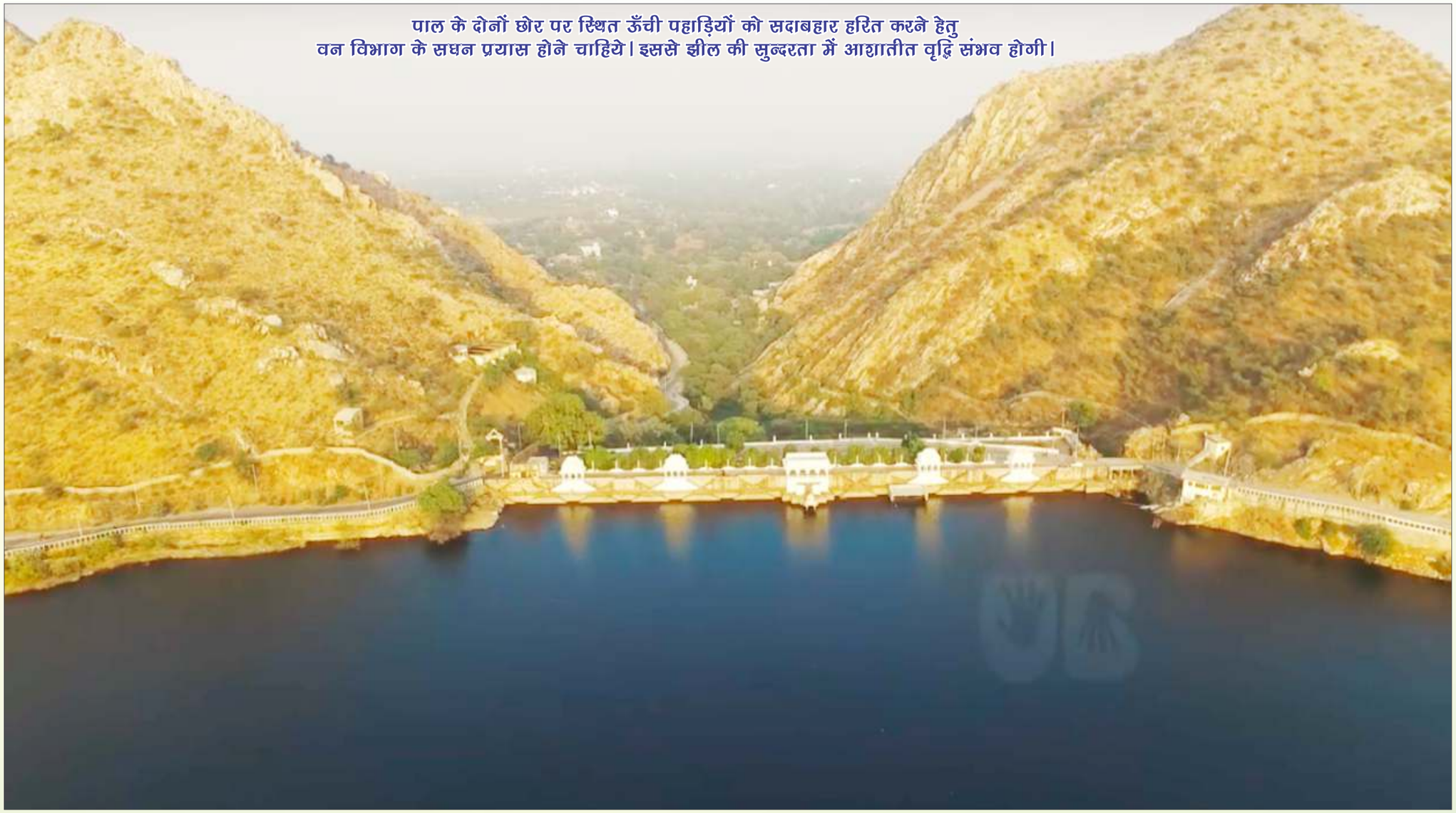

वर्षाकाल में मेवाड़ अंचल में मेघों की मेहर लगभग बनी रहती है। इस दौरान जलाशयों में पानी की अच्छी आवक होती है। वहीं धरा भी हरी चुनर ओढ़कर अपनी चरम सुन्दरता में निखरी हुई रहती है। उदयपुर के बड़ी तालाब व आसपास बारिश के बाद अरावली पर्वतमालाओं पर छाई हरियाली। बाहुबली पहाड़ी से लिया गया मनोहारी नजारा जो हर किसी के मन को प्रसन्न एवं प्रफुल्लित कर देता है।

बड़ी तालाब पर्यटक स्थल के रूप में ही विकसित हो : उदयपुर शहर में पेयजल की आपूर्ति हेतु पिछोला, फतहसागर, जयसमन्द, मानसी वाकल, ओपनवेल एवं ट्यूबवेल से पेयजल लिया जा रहा है। वर्ष 2019 में पिछोला, फतहसागर एवं मानसी वाकल में निर्धारित मात्रा में जल की आवक विशेषकर गर्मियों में नहीं होने के कारण बड़ी तालाब से भी जल लाया गया। 370 एमसीएफटी भराव क्षमता का यह तालाब उदयपुर शहर को जल संकट से कुछ हद तक बचा सकता है लेकिन इसका केचमेन्ट क्षेत्र सीमित होने से शहर की बढ़ती आबादी के लिए नए विकल्प भी तलाशने होंगे।

बड़ी तालाब से शहर को जल सप्लाई के लिए दो पाइप लाइनें ड़ाली गई। इनमें से एक पाइप लाइन बड़ी से दूध तलाई फिल्टर प्लान्ट और दूसरी बड़ी से नीमच माता फिल्टर प्लान्ट तक ड़ाली गयी। दोनों ही पाइप लाइनों से करीब 14 एमएलडी पानी उठाया जा रहा है। शहर की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि एवं आवासीय कॉलोनियों के लगातार विस्तार के कारण भविष्य की जलापूर्ति में पिछोला, फतहसागर की भांति बड़ी तालाब भी गर्मियों में खाली होने लगेगा एवं यह पर्यटक स्थल भी अपना ऐतिहासिक आकर्षण खोता चला जायेगा। जलदाय विभाग को विरासत में मिले इस जल स्रोत के स्थान पर मानसी वाकल तृतीय एवं चतुर्थ तथा देवास तृतीय एवं चतुर्थ पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। बड़ी तालाब को विश्व–प्रसिद्ध नैनीताल की नैनी लेक की तर्ज पर सुन्दर झील के रूप में विकसित करना चाहिये। यह हमारी झीलों की नगरी के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि होगी। यह कार्य वन विभाग, नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास के सद्प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

बड़ी तालाब के छलकने के पश्चात् ही इसका पानी शहर में स्थित फतहसागर में समाहित होता है, इस दृश्य को इस चित्र के माध्यम से परिलक्षित किया गया है।

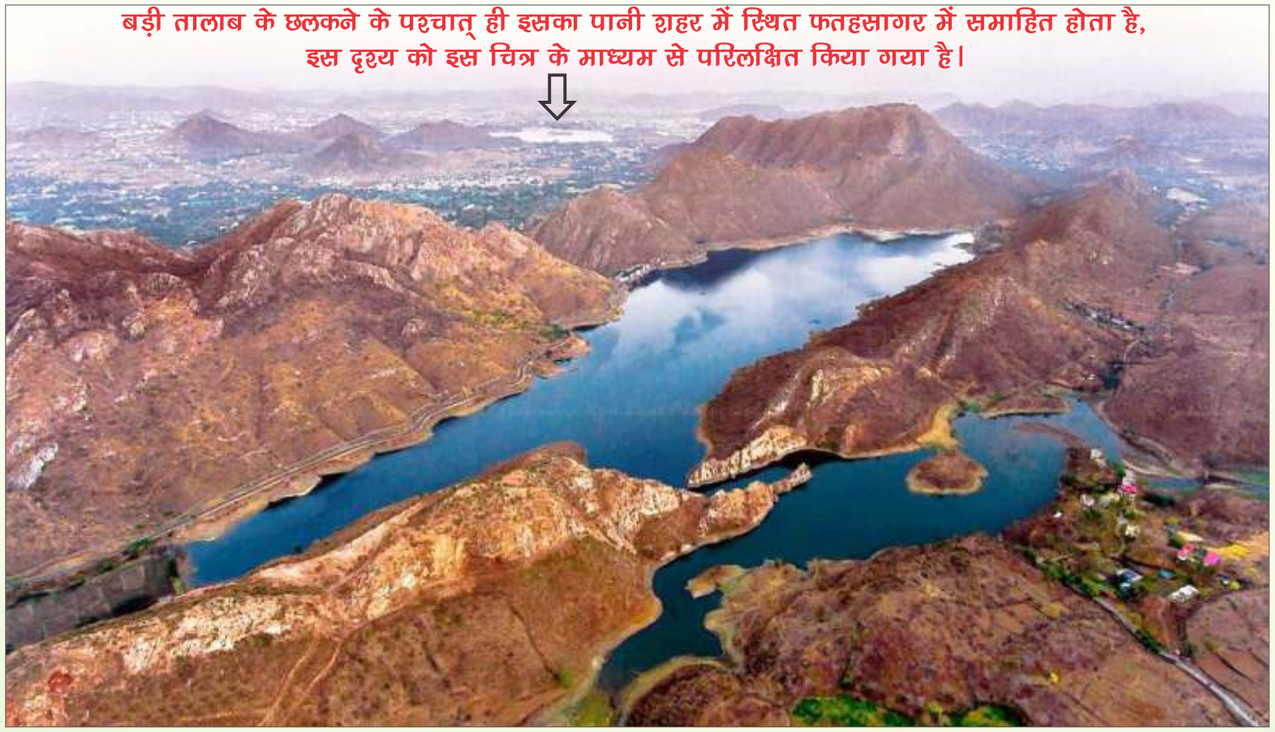

बड़ी तालाब के उत्तरी–पूर्वी पहाड़ी से लिया गया विहंगम दृश्य

ओवरफ्लो स्थल के विविध स्वरूप

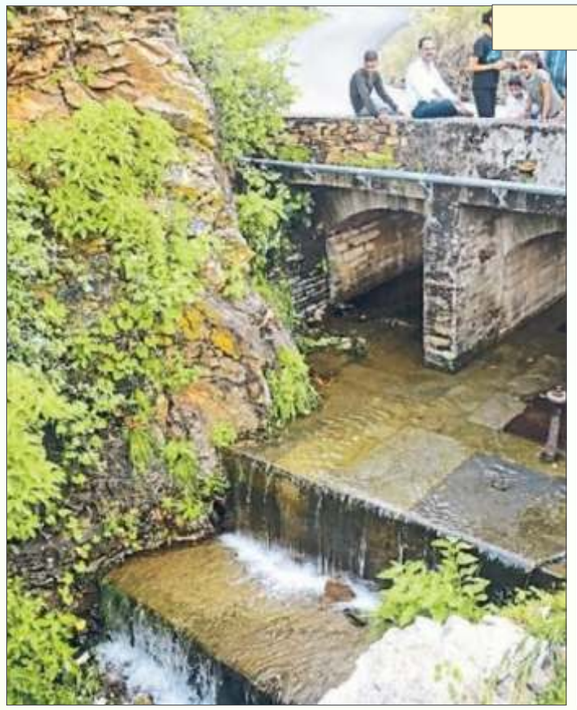

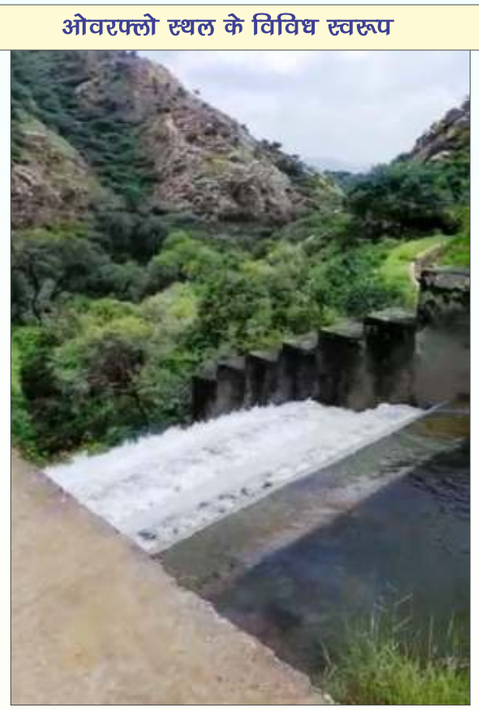

शहर के समीप स्थित बड़ी तालाब की पूर्ण भराव क्षमता 32 फीट होने के पश्चात् इसके ओवरफ्लो स्थल से बहता हुआ पानी बड़ी गांव से होते हुए फतहसागर में समाहित होता है। पिछले 12 वर्षों (वर्ष 2011 से 2022 तक) में मात्र दो वर्षों (26 सितम्बर, 2017 एवं 28 अगस्त, 2022) में ही यह झील छलकी है। इसके ओवरफ्लो स्थल से पानी बहुत ऊँचाई से गिरता है जिसका दृश्य अति मनोहारी लगता है। बड़ी से फतहसागर तक के नाले का विस्तार से सर्वे करवाकर उसे संरक्षित कर जीर्णोद्धार करने से इसका पानी फतहसागर तक सुगमता के साथ पहुँच सकेगा। वर्तमान में इसका पानी आसपास के खेतों में भरा हुआ रहने के साथ निचले क्षेत्रों में बहता हुआ भी देखा जाता है।

बड़ी तालाब के प्रमुख पर्यटक स्थल बाहुबली हिल पर पर्यटकों एवं शहरवासियों का काफी जमावड़ा रहता हैं। यहां से बड़ी झील की नैसर्गिक सुन्दरता की झलक का वृहद् अवलोकन संभव है। वन विभाग द्वारा बाहुबली हिल को एक उच्च स्तरीय एवं दर्शनीय उद्यान के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।

बड़ी झील अति दर्शनीय है। इसे प्रतिवर्ष नियमित रूप से भरने हेतु पानी की आवक बढ़ाने की दिशा में आवश्यक प्रयास किये जाने चाहिये। इस झील से उदयपुर शहर, बड़ी एवं आसपास के गांवों में जलापूर्ति एवं सिंचाई हेतु पानी का दोहन नहीं करना चाहिये।

बड़ी तालाब बाहुबली हिल से विहंगम् दृश्य – पर्यटकीय दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।
वन विभाग द्वारा इस क्षेत्र को विकसित किया जाना अपेक्षित है।

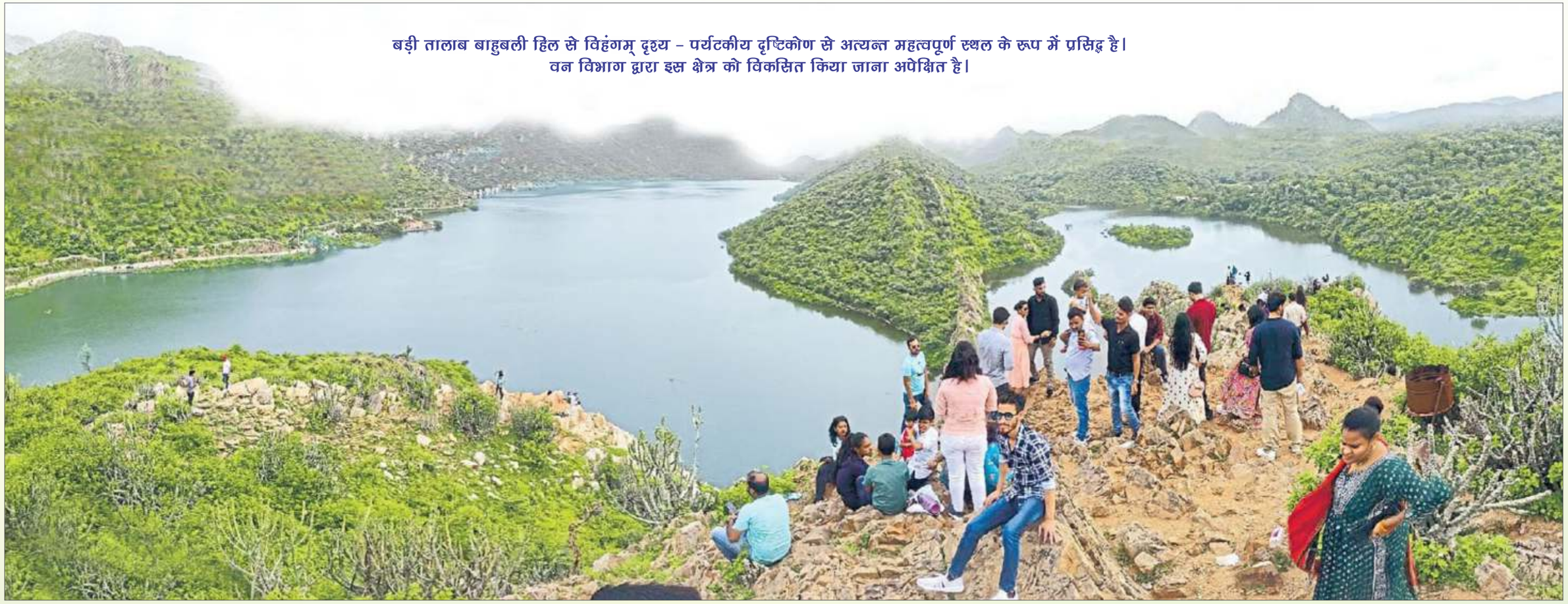

बड़ी तालाब : विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र एवं विशाल अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ विहंगम दृश्य

बड़ी तालाब के उत्तरी-पश्चिमी छोर का विकास : बड़ी तालाब के पूर्वी छोर की भांति उत्तरी-पश्चिमी छोर का भी विकास किया जाना चाहिये। यहाँ पर पर्यटकों हेतु एक नया आकर्षण का केन्द्र विकसित हो सकेगा। इस झील के उत्तरी छोर पर स्थित ऊँची पहाड़ी पर वन विभाग द्वारा स्वयं या पीपीपी मोड़ पर इस झील के प्राकृतिक एवं विशाल स्वरूप को निहारने हेतु एक आकर्षक पॉइन्ट विकसित करना चाहिये। वर्तमान में यह एक अविकसित स्थल है फिर भी यहां पर काफी संख्या में पर्यटकों एवं शहरवासियों की आवाजाही रहती है।

बड़ी-फतहसागर नाला एवं रखरखाव : बड़ी तालाब के पूर्ण भराव के बाद ओवरफ्लो का पानी एक नाले के माध्यम से फतहसागर में समाहित होता है। यह नाला अनेक स्थानों पर अतिक्रमित है। इस नाले को अतिक्रमण मुक्त करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। बड़ी तालाब से फतहसागर आने वाले नाले के आसपास रिसोर्ट, होटल, फार्महाउस आदि बन गए हैं और बन रहे हैं जिनका अपशिष्ट वर्षभर नाले में डाला जा रहा है। साथ ही आसपास के गांवों की गन्दगी भी नाले में ही छोड़ी जा रही है। ऐसे में जब भी बड़ी तालाब ओवरफ्लो होता है या इस क्षेत्र में वर्षा होती है तब यह संपूर्ण गन्दगी बहकर सीधे फतहसागर में समाहित हो जाती हैं। बड़ी तालाब अभी तक अतिक्रमण से मुक्त है जिसका बड़ा कारण यह है कि तालाब के आसपास का क्षेत्र वन विभाग के अधीन है। इसके अतिरिक्त तालाब के मदार वाले मार्ग पर काश्तकारी पट्टों के खेत स्थित हैं।

बड़ी से फतहसागर को जोड़ने वाले करीब 7 से 8 कि.मी. लम्बे इस नाले को पक्का करने के लिए प्रयास किये जाने चाहिये। इसके लिए रेवेन्यू आंकड़ों के आधार पर नाले को सर्वे द्वारा चिह्नित किया जाना चाहिये। ग्रामीणों एवं होटल व्यवसायियों को संयुक्त रूप से इस नाले को पक्का करने हेतु प्रयासरत होना चाहिये जिससे कि भविष्य में अतिवृष्टि के समय नाले के आसपास बसी आबादी क्षेत्र में जानमाल की क्षति का सामना नहीं करना पड़े।

बड़ी गांव एवं आसपास की पहाड़ियों में अच्छी वर्षा होने से बड़ी तालाब के ओवरफ्लो होने पर एक नाले से होकर इसका पानी शहर की फतहसागर झील में पहुँचता है। मदार तालाब के साथ बड़ी तालाब भी फतहसागर झील का एक जल स्रोत है।

समीक्षा एवं सुझाव :

- वर्तमान में इसका जल पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त है। नगर निगम, उदयपुर द्वारा इसकी पाल पर कलात्मक छतरियाँ, समुचित प्रकाश व्यवस्था एवं पार्क का निर्माण किया गया है। पर्यटन की दृष्टि से इसका विकास हुआ है लेकिन अभी भी इसकी बहुत संभावनाएं हैं।
- पूर्ण पाल पर रखरखाव के अभाव में जंगली पौधे आदि फैल रहे हैं, इनका नियमित नियंत्रण एवं साफ–सफाई आवश्यक है।
- पाल के उत्तरी–पश्चिमी छोर पर उपलब्ध स्थल को विकसित कर इसे पर्यटकों के विश्राम, झील की सुन्दरता तथा पारिस्थितिकी तंत्र की विशालता को देखने के लिए उपयुक्त बनाया जाना चाहिये।
- पाल पर स्थापित जल संयंत्र एवं पाइप लाइन से पाल की सुन्दरता अवरुद्ध हो रही है। इसे अन्यत्र पास ही स्थानान्तरित किया जाना चाहिये।

मुख्य पाल

पाल का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र – विकास अपेक्षित है

पाल पर स्थित पम्प स्टेशन सुन्दरता में अवरुद्धता

- पाल एवं छतरियों पर पशुओं के मुक्त विचरण एवं मुख्य पाल पर घुड़सवारी होने से पर्यटकों को असुविधा रहती है।
- पाल पर जगह–जगह गन्दगी, प्लास्टिक डिस्पोजल, अवशेष खाद्य सामग्री, अव्यवस्थित पार्किंग आदि इस झील की सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।
- सफाईकर्मियों द्वारा पाल पर पसरे कचरे को एकत्रित कर पाल पर ही जला दिया जाता है, इससे पाल के बदरंग होने के साथ ही पर्यटकों को बैठने एवं घूमने में अटपटा महसूस होता है। इस पर प्रभावी नियंत्रण कर वन विभाग एवं ईको डवलपमेन्ट कमेटी ने एक सकारात्मक कदम उठाया है, यह अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। अपेक्षा है कि भविष्य में ऐसे दृश्य पुनः नहीं दिखेंगे तथा इस तालाब को उदयपुर शहर के एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में पहचान मिलेगी।

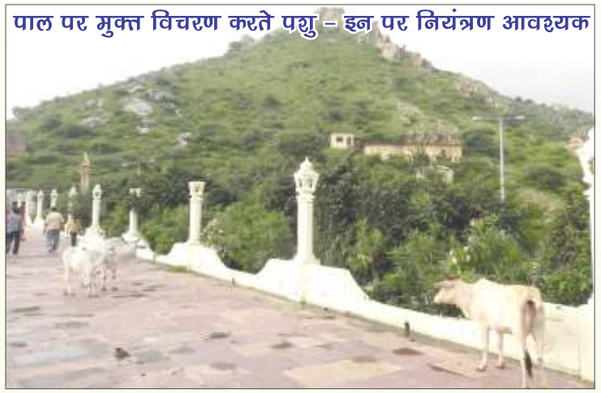
पाल पर मुक्त विचरण करते पशु – इन पर नियंत्रण आवश्यक

पाल को कचरा पात्र ना बनावें – इसे स्वच्छ रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

- पाल के पश्चिमी छोर पर पूर्व में अव्यवस्थित निर्माण था, उसे हटाकर वर्तमान में पाल को पूर्ण लम्बाई के साथ विकसित कर इस स्थान पर एक व्यवस्थित केन्टिन, सुरक्षा स्थल एवं सुविधाकक्ष का निर्माण किया गया है। इससे पर्यटकों को आवश्यक सुविधाएँ आसानी से प्राप्त हो रही है। वन विभाग की ईको डवलपमेन्ट कमेटी का यह प्रयास काफी सराहनीय है।

पाल पर स्थित अनुपयोगी भण्डारण कक्ष – पाल की सुन्दरता में दाग था

- तालाब की पाल पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से कैमरे युक्त समुचित सुरक्षा व्यवस्था हो। जिससे पिकनिक मनाने वाले शराब की बोतलें व प्लास्टिक, शेष खाद्य पदार्थ आदि पाल पर फेंक कर ना जा सके। असामाजिक तत्वों द्वारा आधारभूत सुविधा एवं प्रकाश व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने से बचाया जा सके।
- पाल की रखरखाव की नियमित व्यवस्था हो जिससे फर्श उखडना, दीवारों के पत्थर निकलना, प्लास्टर उखड़ना, दीवार बदरंग होने जैसे अशोभनीय दृश्य पर्यटकों को भविष्य में दृष्टिगत न हो।

भण्डारण कक्ष के स्थान पर नव–निर्मित अल्पाहार गृह

पाल पर निर्माण कार्य उच्च स्तर का होना चाहिये – ऐसे दृश्य नहीं दिखे।

- पाल के पूर्वी छोर पर प्रवेश मार्ग बहुत सिकुड़ा हुआ है जिसे पर्याप्त चौड़ाई युक्त बनाकर वाहन पार्किंग की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये।
- पाल के समीप एक व्यवस्थित फूड हब बनाया जाना चाहिये जिससे पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों को स्वच्छ खाद्य सामग्री स्वच्छतापूर्ण वातावरण में उपलब्ध हो सके।
- इस झील को अतिरिक्त जल स्रोत देवास प्रथम एवं मजावद के पास बगडून्दिया तालाब से जोड़कर अधिकतम् जल भराव क्षमता पर रिंग रोड़ बनाकर तालाब के मध्य जेट फाउण्टेन, पाल एवं पेडल नावों का संचालन पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था के साथ विकसित किया जाना चाहिये।
- रिंग रोड़ पर 'ईकोटोन पार्क' नामक पार्क विकसित किया गया है। पर्यावरण के प्रत्येक दृष्टिकोण एवं नियमों को ध्यान में रखते हुए विश्वप्रसिद्ध नैनीताल की नैनी लेक से भी सुन्दर एवं विशाल झील के रूप में इसे विकसित किया जा सकता है।

  ईकोटोन शब्द पारिस्थितिकी में अति महत्त्वपूर्ण है। ऐसे स्थान जहां दो या दो से अधिक किस्म के पारिस्थितिकी तंत्र मिलते हैं, ऐसे संधि स्थल को ईकोटोन या संक्रमिका के नाम से जाना जाता है। दोनों आवासों की वनस्पति एवं जन्तु प्रजातियाँ इस संधि जोन में देखी जा सकती है। इस प्रकार जैव प्रजातियों की संख्या इस जोन में अधिक होती है, इसे 'किनारे का प्रभाव' कहते है।

  बड़ी तालाब पर प्रमुख रूप से चार पारिस्थितिकी तंत्र – वन, नम भूमि, ग्रासलैण्ड तथा कृषि पारिस्थितिकी तंत्र मिलते हैं। ये चारों ही पारिस्थितिकी तंत्र अपने आप में पूर्ण हैं, क्योंकि चारों में उत्पादक, प्राथमिक उपभोक्ता (शाकाहारी), द्वितीयक उपभोक्ता (माँसाहारी) तथा विघटक विद्यमान हैं। यहाँ एक पाँचवा पारिस्थितिकी तंत्र – मानव आवास भी उपस्थित है जो कि मानव जनित है। यह मानव जनित पारिस्थितिकी तंत्र अपने आप में एक अपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र है जो अपने अस्तित्व के लिए शेष चार पारिस्थितिकी तंत्रों पर निर्भर है।
- वन विभाग द्वारा तालाब के दक्षिणी छोर पर विकसित 'ईकोटोन पार्क' उदयपुर के लिए एक नई एवं प्रशंसनीय पहल है। हरीतिमा से घिरे इस केन्द्र पर लगाए गए टेन्ट में पर्यटक ठहर सकते हैं। यहां प्रकृति प्रेमियों को ''नेचर एडवेन्चर'' वानिकी एवं जैव विविधता के अनुभव का अनूठा अवसर मिलेगा। इस फोरेस्ट केम्प में डबल बेडेड 10 टेन्ट लगाए गए थे। यहां पर चबूतरों का निर्माण एवं अन्य विकास कार्य भी किये गये हैं। पर्यटन एवं वन विभाग की ओर से ब्रोशर एवं स्वागत केन्द्रों के माध्यम से सैलानियों को इसकी जानकारी दी गयी। यह रोमांचकारी व्यवस्था वर्ष पर्यन्त पर्याप्त सुरक्षा एवं स्वच्छ खाद्य सामग्री के साथ नेचर एडवेन्चर भ्रमण के साथ पीपीपी मोड पर उपलब्ध रहनी चाहिये। साथ ही टेन्ट जो पूर्व लगाये गये थे उन्हें पुनः सुसज्जित तरीके से पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु लगाये जाने चाहिये।
- बड़ी तालाब के पूर्वी छोर पर एवं 'पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल' के तलहटी क्षेत्र, जो वर्तमान में पानी के उतरने के साथ एक पिकनिक स्थल का रूप ले लेता है, इस स्थल को व्यवस्थित रूप में विकसित किया जाना चाहिये। वर्तमान में यह स्थल जगह–जगह गहरे गड्ढ़ों से युक्त हैं जिससे दुर्घटना की पूर्ण संभावना रहती है तथा दुर्घटनाएँ घटित भी हो चुकी हैं। इसे रिंग रोड की तरफ से तालाब की ओर एक समान लेवल से उतरते हुए स्थल के रूप में गड्ढ़ा मुक्त कर विकसित किया जा सकता है। इससे पर्यटक इस स्थल पर परिवार सहित 'समुद्री किनारे की तर्ज' पर सुरक्षित जल क्रीड़ा कर सकेंगे। यह उदयपुर शहर के लिए एक नवीन पर्यटन स्थल बन सकता है।

ईकोटोन पार्क से विशेष पारिस्थितिकी तंत्र का सिंहावलोकन

विश्वप्रसिद्ध नैनीताल की नैनी लेक – बड़ी तालाब को इसी तर्ज पर पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखते हुए विकसित किया जा सकता है।

इकोटोन पार्क – पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल

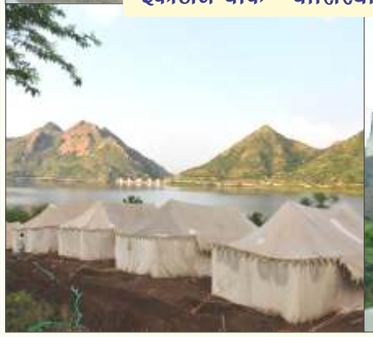

बड़ी तालाब का पूर्वी छोर – समुद्री किनारे की तर्ज पर इस क्षेत्र को गड्ढा मुक्त कर सुव्यवस्थित रूप से ढलान बनाकर गहराई को चिह्नित करते हुए विकसित किया जा सकता है।